'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ५२ } वाराणसी, शनिवार, २ मई, १९५९ { पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

ननहेरा (पंजाब) २१-४-'५९

देश तभी सुधरेगी, जब रूहानी ताकत बढ़ेगी

भारत का पुराना इतिहास है। उसमें कितना फर्क हो गया है। अनेक राजा आये और गये। अनेक जमातें आयीं। अनेक राज्यों में उथल-पुथल हुई। पंजाब में भी यही देखा गया। यहाँ यूनानी, ईरानी, मुगल, पठान, मध्यएशियाई जमातें और वैदिकधर्मी आये। वेदांत चला, संतों का काम और फकीरों का प्रचार हुआ। बड़ी से बड़ी लड़ाइयाँ हुईं। यह एक ऐसा प्रदेश है, जहाँ लोगों में उत्साह भरा है। रग-रग में स्फूर्ति भरी है। आज मैं सहज बातें कर रहा था। मैंने कहा—पंजाबी भाषा के शब्दों में कितना जोर है। हिंदी में 'हाथ' कहेंगे, तो पंजाबी में 'हत्थ'। हिंदी में 'काम' कहेंगे, तो पंजाबी में। 'कम्म' इस तरह हर बात में जोर है और वह शब्द के उच्चारण में भी दीखता है। इस प्रकार की यहाँ तवारीख है।

पंजाब की अद्भुत दृढ़ता

मैं मानता हूँ कि आखिर अंग्रेजों का मुकाबला किनकी ताकतों से हुआ? मराठों की ताकत, रजपूतों की ताकत, सिखों की ताकत! पंजाब बिलकुल आखिर में अंग्रेजों के हाथ गया। राजस्थान तो कब का जा चुका था, महाराष्ट्र भी जा चुका था। बंगाल तो बहुत पहले उनके हाथ में चला गया था। इस तरह पंजाब ने बहुत प्रतीकार किया। पंजाब ने खूब सहन किया है। मेरा खयाल है, गत १०-१२ सालों में जो दुःख पंजाब ने सहन किया और बंगाल ने देखा, वह और किसी प्रांत ने नहीं देखा। हमारे आंदोलन के पहले ये सारी घटनाएँ हुईं। यह बड़ा ही भयानक दृश्य माना जायगा। गांधीजी का कुल आंदोलन अहिंसा का था। लेकिन लाखों लोगों को इधर से उधर जाना पड़ा और उधर से इधर। गाँव के गाँव उजड़ गये। उन्हें फिर से बसाना पड़ा। कई दुःखदायक घटनाएँ हुईं। मेरा खयाल है, जो दुःख बड़ी-बड़ी लड़ाइयों में नहीं भोगने पड़े, वे इस अहिंसक आंदोलन में लोगों को सहने पड़े। इस तरह यह एक अनुभवी प्रजा है। इसे दस हजार साल का अनुभव है और इसने इतनी मुसीबतें सही हैं। इतना होने पर भी यहाँ के लोग मिटे नहीं, खड़े ही हैं, यह एक गुरूर की बात है।

इन आपसी झगड़ों का मूल्य नहीं

यही बात भारत की है। भारत का सौभाग्य है कि यहाँ असंख्य जमातें एक साथ रहती हैं। वह आपस में झगड़ती भी हैं। किंतु गुरूर की बात यह है कि आपस के इन झगड़ों को 'गृहयुद्ध' कहा जाता है। अंग्रेजों ने जो इतिहास लिखा है, उसमें यह जिक्र किया गया है कि 'जब अंग्रेज यहाँ आये थे तो कुल भारत एक देश था और उसमें जो झगड़े चलते थे, वह गृहयुद्ध था।' याने वे आपस के झगड़े थे। यह बड़ी गौरव की बात है। अगर ऐसे ही झगड़े यूरोप, फ्रान्स, इंग्लैंड, स्कॉटलैण्ड में हो जायँ, तो वह गृहयुद्ध नहीं, राष्ट्रीय युद्ध माना जायगा। जर्मन और फ्रेंच लोगों का युद्ध राष्ट्रीय युद्ध होगा, पर मराठों की और रजपूतों का युद्ध गृहयुद्ध था। कारण हमारे ऋषियों ने काश्मीर से कन्याकुमारी तक एक आर्य देश बनाया है। इसलिए यहाँ की लड़ाइयाँ आपस की मानी जाती हैं। फ्रान्स और जर्मनी की लड़ाई आपस की मानी जानी चाहिए, पर वैसा नहीं होता; क्योंकि उनके दिल छोटे बने हैं। हमारे यहाँ अधिक-से-अधिक माँग हुई, तो 'अमुक भाषा का अलग प्रांत कीजिये' यही माँग की जाती है। यह हमारा कितना सौभाग्य है कि अत्यन्त विकसित और शक्तिशाली १४ भाषाएँ यहाँ हैं। इसलिए यहाँ झगड़ा हों, तो भी वह गौरव की बात है। सिर्फ मिया-बीबी की गृहस्थी में झगड़ा न हो, तो कोई आश्चर्य नहीं है। ४०-५० लोग एक परिवार में रहते हों और उनमें झगड़ा हो, तो भी कोई आश्चर्य नहीं। इसलिए हिंदुस्तान और पंजाब में, मिली-जुली जमातें होने पर झगड़े होते हों, तो कोई आश्चर्य नहीं। उन झगड़ों का कोई महत्त्व नहीं। ये झगड़े एक दिन मिटनेवाले ही हैं, टिकनेवाले नहीं।

मुख्य प्रश्न देहात बनाम शहर

हमें सिर्फ इतना ही देखना होगा कि हिन्दुस्तान के जो दो भाग हुए हैं, वे खतरनाक हैं—देहात एक बाजू, शहर दूसरी बाजू। कुछ लोगों को ऊँची तालीम मिली है, तो कुछ बिलकुल अशिक्षित रह गये हैं। अंग्रेजी तालीम पाये हुए लोगों की रहन-

सहन, जबान में फर्क पड़ा। उनका जीवनमान पहले से ही ऊँचा था, वह और भी ऊँचा हो गया। अंग्रेजी तमद्दून का अभ्यास यहाँ के ऊँचे वर्ग ने किया और उनका ध्यान यूरोप-अमेरिका की ओर जाने लगा। वे कोई काम नहीं करते थे। तालीम में भी काम का संबंध नहीं था। तालीम के बाद भी कुर्सी पर बैठने का काम ढूँढ़ते हैं; वह भी तीन अँगुलियों का, सात अँगुलियाँ बेकार ही रहती हैं। परिणामस्वरूप दो वर्ग हुए। आज भी वैसी ही तालीम बढ़ रही है। मैंने सुना है कि पंजाब में हजारों विद्यार्थियों ने मैट्रिक की परीक्षा दी है। अब इतने लोगों को नौकरी कौन देगा? नौकरी न मिलेगी, तो लड़के कम्युनिस्ट न बनेंगे तो क्या होगा? इसके परिणामस्वरूप शहर और देहात के बीच दीवार-सी खड़ी हो गयी है। देहात में जो बच्चा तालीम पाता है, वह काम नहीं करना चाहता। उसका बाप भी यही चाहता है कि जो काम, शरीर-परिश्रम मुझे करना पड़ता है, वह मेरे बच्चे को न करना पड़े। कहावत है–उत्तम खेती मध्यम व्यापार। नौकरी सबसे नीचे की श्रेणी की मानी गयी है, किन्तु आज वही सबसे उत्तम हो गयी है। इसीसे ये सारे झगड़े पैदा होते हैं। आज सारे अखबार शहरों के झगड़ों से भरे रहते हैं। अखबार भी उन्हींके होते हैं। यह अलग बात है कि इन दिनों किसीने खूब अच्छा उत्पादन किया, तो उसे पंडित पदवी मिलती है और उसकी खबर इन अखबारों में आ जाती है, परन्तु ज्यादातर शहरों के झगड़ों की खबरें ही रहती हैं। देहात जलकर भस्म हो जाय, तो भी उसकी कोई खबर नहीं रहती। उसका कोई महत्त्व ही नहीं माना जाता। बहुत भयानक हालत है। यह तब तक चलेगा, जब तक गाँव न जागेंगे और उनका शहर पर हमला न होगा।

आज तो शहर पर देहातों का हमला दूसरी तरह से हो रहा है। गाँव की श्रमशक्ति और बुद्धिशक्ति दोनों शहरों में जा रही हैं और बेवकूफ और आलसी लोग गाँव में रह जाते हैं। फलतः आपस में लड़ाई झगड़े होते हैं। इसलिए हमें शहर में नहीं जाना चाहिए। बल्कि यह हिम्मत करनी चाहिए कि हम अपने गाँव ही ऐसे सुन्दर बनायेंगे कि शहर के लोगों को इच्छा होगी कि 'चलो, गाँव देख आयें।' गाँवों में सुन्दर हवा, स्वास्थ्य, खेत, नदी, पानी सारा सौंदर्य भरा है—सिर्फ मानव जीवन ठीक हो जाय। इसके विपरीत शहर में शांति नहीं। रात में रेडिओ चिल्लाता है, अंधेरे को आग लगा दी जाती है। मोटरें दौड़ती हैं, जिससे चित्त स्थिर नहीं रहता। इन दिनों बड़े-बड़े मसले पेश किये जाते हैं और निर्णय जल्दी करने की आवश्यकता होती है। विज्ञान का तकाजा होता है कि फैसले जल्दी करो। छोटा-सा मसला भी अन्तर्राष्ट्रीय रूप ले लेता है, साम्प्रदायिकता बन जाता है। कहीं छोटा-सा झगड़ा होने पर भी दुनिया भर में उसकी खबर फैल जाती है। ऐसी हालत में बुद्धि स्थिर न हो, तो बहुत खतरा होता है।

शासक स्थितप्रज्ञ चाहिए

इसीलिए मैंने कहा था कि 'भगवद्गीता' में 'स्थितिप्रज्ञ' का, कायमुल अक्ल का जो महत्त्व बताया है, आज के जमाने में उसकी बहुत ज्यादा जरूरत है। लेकिन आज दुनिया में जिनके हाथों में राष्ट्र की बागडोर दी जाती है, उनके पास स्थिर बुद्धि नहीं है। बी० ए०, एम० ए० पास करने से वह बुद्धि नहीं आती। इससे न सिर्फ हिन्दुस्तान को, वरन् सारी दुनिया को खतरा है। जो अपने पर काबू नहीं रख सकते, वे राज क्या चलायेंगे? पुराने जमाने में औरंगजेब जैसे बादशाह का हुक्म सारे देश में अमल में आने के लिए कई महीने लगते थे, पर आज पाँच मिनट में सारे देश में हुक्म लागू हो सकता है। फिर भी जो बात राजशाही में थी, वही आज लोकशाही में भी चल रही है। आज मुट्ठी भर लोगों के ही हाथों में सारी सत्ता दे दी गयी है। शादी, तालीम, व्यापार, खेती-सुधार इत्यादि सब सरकार ही तय करे, ऐसा माना जाता है। फर्क इतना ही है कि यह सत्ता सिर्फ पाँच साल के लिए होती है। लेकिन इस जमाने के पाँच साल पुराने जमाने के पचास साल के बराबरी के हैं। नयी सरकार आने पर करोड़ों रुपये खर्च करके बनी किसी योजना का बंद करना संभव नहीं। उसे वह स्कीम आगे चलानी ही होगी। इस तरह स्पष्ट है कि आज जिसके हाथ में बागडोर होती है, वे स्थितप्रज्ञ नहीं होते। वे बहुमत से चुनकर आते हैं अगर आज गुरु नानक चुनाव लड़ते, तो क्या चुन आते? वे तो फकीर थे। वे चुनाव लड़ते, तो कभी चुन नहीं आते। चुनाव में तो वोट खरीदे जाते हैं। वह तो पैसे की दुनिया है। बचपन में हमने एक कविता पढ़ी थी, जिसका अर्थ था "आत्मस्तुति परनिंदा, मिथ्या-भाषण, ये तीन गुण (?) नहीं होने चाहिएं।" किंतु ये ही तीन गुण (?) चुनाव में होते हैं। आज का चुनाव का तरीका ऐसा हो है। ऐसी हालत में हमें यही करना होगा कि देहात को ऐसे मजबूत और सुन्दर बनायें, ताकि शहरों पर उनका असर पड़े। आज शहरों का असर देहात पर पड़ता है। कल देहात का असर शहरों पर हो सकता है।

ग्राम-परिवार के लाभ

अगर हम गाँव को एक परिवार बनाने का काम करेंगे, तो सारी सभ्यता गाँव में प्रकट होगी। अच्छे-अच्छे विद्वान् गाँव में आयेंगे। उत्तम चित्रकार, उत्तम संगीतज्ञ गाँव में होंगे। कुदरत के दृश्य, चंद्र-सूर्य-उदय, पानी लेकर लड़की का जाना, इस तरह सुंदर-सुंदर दृश्य देहात में ही देखने को मिलते हैं। इन दिनों शहरों में भद्दा संगीत चलता है। रेडिओ ऊँची आवाज में सुनते हैं। मेरा खयाल है कि कुछ दिनों बाद लोगों को गधे की आवाज भी पसन्द आयेगी। कुछ लोग लाउडस्पीकर पर इतने जोर से बोलते हैं कि मुझे तो वह लाठीचार्ज जैसा ही लगता है। मुझे लगता है कि इस तरह के संगीत से उत्तम संगीत चला जायगा, भले ही आप संगीत-अकादमी, नाटक-अकादमी चलाते रहें। मैं तो ऐसे आल इण्डियावाले गानों से बहुत डरता हूँ। सारांश, गाँवों को अपने पाँवोंपर खड़ा होना होगा-सुन्दर बनाना होगा। इसकी बुनियाद है, ग्रामदान। हमें ग्रामदान से डरना नहीं चाहिए। ग्रामदान से आपकी जमीन रेहन नहीं रखी जायगी, मौका पर साहूकार के हाथ में नहीं जायगी। इसीमें खतरा मानते हों, अलग बात है।

ग्रामस्वराज्य से ही गाँव सुखी होंगे

आज देहात और शहरों के बीच जो यह दीवार है, वह खतरनाक है। उसे तोड़ना ही चाहिए। आज देहातों का जो शोषण चल रहा है, वह बन्द होना चाहिए। बाकी ये सारे झगड़े खतम ही होंगे। ये झगड़े करनेवाले भी खतम होंगे। इतना बड़ा सिकन्दर बादशाह! वह पंजाब में आया था। उसके साथियों ने आगे जाने से इन्कार किया। जब वह वापस

जाने लगा, तो रास्ते में एक अंधा फकीर अपनी भक्ति में भजन गा रहा था। सिकन्दर बादशाह ने उससे पूछा–'तेरे सामने कौन खड़ा है?' उसने जवाब दिया–'मालूम नहीं।' सिकंदर ने कहा–'तेरे सामने दुनिया का बादशाह खड़ा है।' फकीर ने कहा–दुनिया का बादशाह? दुनिया का बादशाह तो मैं हूँ।' सिकंदर देखता ही रह गया। फकीर गंभीरता और शांति से और बोल रहा था। उस शान्ति का सिकंदर पर बहुत असर हुआ।

हमारे देहात अमन-चैन से रह सकते हैं। उनके पास दूध, मक्खन, घी है। इसलिए जब कम्युनिस्ट मुझसे कहते हैं कि 'इन अमीरों से छीनना चाहिए' तो मैं कहता हूँ–'उनके पास सिवा कागजी नोटों और पत्थरों के धरा ही क्या है?' फिर भी ये लोग यही पैसा दिखाकर देहातियों से घी, दूध, तरकारी छीनते हैं। यहाँ तक होता है कि माँ बच्चों को मक्खन नहीं खिलाती, शहर में बेचती है। यह सारा नहीं रहेगा, अगर हम गाँव-गाँव का स्वराज्य बनायेंगे, परिवार बनायेंगे। फिर झगड़े गाँव से बाहर नहीं जाने देंगे। ऋषियों ने सुंदर-सुंदर गाँव बसाये थे। हम भी गाँवों को सुंदर बनायेंगे, तो देश की सभ्यता ऊपर आयेगी।

हमारी पुरन्दर-संस्कृति

हमारी सभ्यता गाँव में ही है। वेद में इसका वर्णन आता है–शहरों को फोड़नेवाला, जोड़नेवाला, पुरंदर। हमारी पुरन्दर-संस्कृति है। वेद में आता है–"विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन् अनातुरम्।" हमारे गाँव में परिपुष्ट विश्व आ गये। मैं कहता हूँ, गाँव-गाँव में विश्वविद्यालय हो, जब कि आज वे बड़े-बड़े शहरों में बने हैं। शहर में लोग प्रेम के लिए नहीं, पैसे के लिए एकत्र होते हैं। लेकिन देहात में प्रेम के लिए ही इकट्ठा होते हैं। इन दिनों पैसे की माया चली है, इसलिए लोग शहर की ओर देखते हैं। गाँव की श्रमशक्ति और बुद्धिशक्ति गाँव से बाहर जा रही है। गाँव में एक तीसरी शक्ति है और वह है, प्रेमशक्ति। अगर वह भी गाँव छोड़कर जायगी, तो गाँव नहीं टिकेंगे। इसलिए गाँवों को अपनी योजना स्वयं करनी चाहिए, ये तीनों शक्तियाँ गाँव से बाहर न जायँ, ऐसा करना चाहिए। नहीं तो भले ही भाखरा-बाँध बने—उसका पानी बहता रहे, उधर गरीबों की आँखों से भी आँसू बहते रहेंगे। बाँध से गरीबों की माली हालत बहुत ऊँची होगी, ऐसा नहीं। बाँध बनाने से देश नहीं सुधरेगा। देश तो तभी सुधरेगा, जब देश की रूहानी ताकत बढ़ेगी। फिर उसके साथ-साथ भौतिक सुख, पानी का इन्तजाम वगैरह भी बढ़े। 'ग्रामदान' की बुनियाद पर ग्राम-स्वराज्य की इमारत खड़ी करेंगे, तो देश की नैतिक और भौतिक उन्नति होगी।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

डंट्रल (पटियाला) २३-४'५९

दिमाग अलग-अलग, पर दिल एक हों

आठ साल हो गये, रोज पैदल यात्रा चल रही है। रोज शाम को एक सभा होती है, उसमें हमारा एक भाषण होता है। इसके अलावा जहाँ मुकाम पर पहुँचते हैं, वहाँ भी एक भाषण होता है। फिर कुछ लोग मिलने आते हैं, चर्चा होती है। लेकिन सबसे बढ़कर चर्चाएँ पदयात्रा में होती हैं। आसमान के नीचे, खुली हवा में, सूरज की साक्षी में वे चर्चाएँ हुआ करती हैं। बड़ा आनन्द आता है। आठ साल से लगातार यही आनन्द हम लूट रहे हैं। हमने इसे 'वाकिंग सेमिनार' नाम दिया है। किसीने 'वाकिंग युनिवर्सिटी' नाम दिया है।

अब तो राजपुरा में नयी तालीम-सम्मेलन हो रहा है। नयी तालीम का सम्मेलन हमारे साथ रोज चलता है। हम मानते हैं कि नयी तालीम का काम हम बचपन से कर रहे हैं। हम जो भी काम करते हैं, उसमें ज्ञान की दृष्टि रहती है। ज्ञान के बिना काम नहीं और काम के बिना ज्ञान नहीं।

पंजाब की तह में देखें

आज चर्चा चल रही थी। श्यामसुन्दर ने (पंजाब के 'ट्रिब्यून' के प्रतिनिधि, जो यात्रा में साथ चलते हैं) प्रश्न पूछा—'पंजाब में यह काम कैसे जोर पकड़ेगा?' यहाँ के लोगों के जीवन की ऊपर-ऊपर के स्तर में देखा करेंगे, तो कई प्रकार की चंचलताएँ दीखेंगी। इसलिए ऊपर-ऊपर से इलाज करेंगे, तो हम कामयाब न होंगे। अंदर से कुछ इलाज करना होगा। पानी गहराई में भरा रहता है। हवा चलती है, तो लहरें ऊपर-ऊपर उछलती-कूदती हैं। वे कितनी ही उछल-कूद करें, तो भी पानी को छोड़ नहीं जायँगी। नीचे के स्तर के साथ जुड़ी ही रहेंगी। वैसी गहराई पंजाब में है। नहीं तो क्या वजह है कि पंजाब में ऊपर-ऊपर के स्तर में इतने झगड़े चलते हैं, तो भी ऐसे-ऐसे भजन गाये जायँ, जो अभी गाये गये और वे लोगों को प्रिय हों। आज यहाँ के लोग लड़ते-झगड़ते हैं, अनेक पक्षों, फिरकों और पंथों में बँटे हैं, लेकिन सभी गाने सुनते हैं। याने यहाँ के जीवन में प्यार दीखता है। झगड़े ऊपर-ऊपर के हैं। अन्दर तो एक ही चीज है—"सब हम रहिया प्रभु एकै। पेखि पेखि नानक बिगसायी।" दुश्मन तो कोई नहीं है, पर बिगाना भी नहीं है—"ना कोई बैरी नाही बिगाना।" जितने भाई हैं, सब हमारे हैं। अन्दर की एकता की यह चीज पंजाब के अन्दर है ही। मैं पंजाब में बहुत श्रद्धा से आया हूँ। मैं उसका वर्णन कर नहीं सकता, क्योंकि वेद, उपनिषद्, गीता—सब यहीं से निकले हैं। इस तरह यहाँ कितनी ताकत भरी है, उसकी सीमा नहीं है। बचपन से मैंने गीता का अध्ययन किया है और वह मेरे खून में भरा है। वेद की रटन न चलती हो, ऐसा शायद ही कोई दिन जाता होगा।

भीतर सब कुछ भरा है

मैं यहाँ के चेहरे ऊपर-ऊपर से नहीं देखता, अंदर का देखता हूँ। क्या ऐसा ही चेहरा होगा अर्जुन का? क्या इसी प्रकार का चेहरा होगा भगवान् का? कुरुक्षेत्र से जो आवाज निकली, उसने सारे भारत को पागल बना दिया। क्या शंकर, क्या रामानुज, क्या ज्ञानदेव! और इस जमाने में भी कौन ऐसा था, जिस पर गीता का असर नहीं हुआ? लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, श्री अरविंद, देवेंद्र टागोर, एनीबेसेण्ट, राधाकृष्णन्—कितने नाम लूँ? आखिर मैं इतने व्याख्यान देता हूँ, किताबें भी खूब लोग पढ़ते हैं, खरीदते हैं; लेकिन हस्ताक्षर किस पर करता हूँ? गीता पर ही। वह इस प्रांत की चीज है। भूदान, ग्रामदान, सर्वोदय, ये सारी बातें गीता के संदेश के सामने और उपनिषद् की जबान के सामने बहुत मामूली हैं। ये सारी चीजें यहाँ भरी हैं। सिर्फ बाहर निकालने की जरूरत है।

मैंने यहाँ तीन हजार शांति-सैनिकों की माँग की है। किंतु यहाँ तीन हजार क्या, तीन लाख शांति-सैनिक भी मिल सकते हैं। यह वीरों की भूमि है। जरूरत इस बात की है कि हमारे दिल पाक बनें। शुद्ध, निर्मल बनें। हमारी जबान में मिठास हो। ऐसे चंद लोग निकलेंगे, तो वे पंजाब पर कब्जा कर सकते हैं, इसका मुझे यकीन है।

माँग पूरी श्रद्धा से करें

आज ही एक भाई ने सवाल पूछा था कि 'आपने पाँच करोड़ एकड़ जमीन की माँग की है। वह माँग पूरी होने में कितना समय लगेगा? आखिर मानव-स्वभाव को भी मर्यादा है। क्या आपकी माँग मानव-स्वभाव के खिलाफ नहीं है?' मैंने कहा—'मानव देने के लिए तैयार बैठा है। बात यही है कि हम पूरी श्रद्धा से लोगों के पास नहीं पहुँचते। जैसे पूरी श्रद्धा से बच्चा माँ के पास पहुँचता और माँग करता है, वैसे पूरी श्रद्धा से हम माँग नहीं करते। जनता हमारे मातृस्थानीय है। हम पूरे दिल से, पूरी श्रद्धा से, सरल हृदय से अपनी माँग जनता के सामने रखें, तो हमें जरूर मिलेगा। जनता जरूर देगी, इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है। इसलिए मानव-हृदय के खिलाफ कोई बात नहीं हो रही है। बल्कि मैं तो देखता हूँ कि ये बातें लोगों को प्रिय लगती हैं। त्याग का संदेश सुनने के लिए वे आते हैं। मैं अगर कहता कि तुम भोग करो, मौज करो, तो क्या मेरा व्याख्यान सुनने के लिए लोग आते? मुझे पत्थर मारते। इसलिए यह समझ लीजिये कि लोग तैयार बैठे हैं, उनके पास पहुँचने का काम करनेवाले स्वच्छ हृदयवालों की कमी है।

दिमागों का अलग-अलग होना जरूरी

मैं कभी-कभी अन्दर गोता लगाकर देखता हूँ, तो ऐसा अद्‌भुत विश्वरूप-दर्शन होता है, जिसमें दिल एक ही है, किंतु दिमाग अनेक हैं। दिमागों का अलग-अलग होना जरूरी भी है। उससे विचार की पूर्ति होती है, विकास होता है और विचार आगे बढ़ता भी है। ऐसा नहीं हुआ, तो विचार में जो दोष होगा, वह निकलेगा नहीं। अतः विचार की भिन्नता होना अच्छा ही है। अगर मेरे सामने मेरे दिमागवाले ही लोग बैठेंगे, तो मैं उन्हें क्या व्याख्यान दे सकूँगा? किसको समझाऊँगा? क्या मैं ही अपने को समझाऊँगा? अतः अलग-अलग दिमागों का होना शोभादायक है। ऐसे अलग-अलग दिमाग हों, पर दिल एक होना चाहिए। ऐसा हुआ, तो पंजाब की अन्दर छिपी जो चीज है, वह बाहर निकलकर रहेगी।

◆◆◆

वानप्रस्थाश्रम और राष्ट्रसेवा

जिन लोगों ने व्यावसायिक, व्यापारिक या शासन-सम्बन्धी अनुभव का ज्ञान अर्जित किया है, उन लोगों को चाहिए कि वे वानप्रस्थाश्रम में लोगों को तालीम द्वारा शिक्षित करने का व्रत धारणकर उसे निष्ठापूर्वक पूरा करें। देश के छोटे बच्चों तथा मूर्ख लोगों को शिक्षित करने का महत्त्वपूर्ण काम जितनी तत्परता से वे कर लेंगे, उतनी तत्परता से दूसरा कोई नहीं कर सकता। पं० नेहरू, डॉ० राधाकृष्णन जैसे उच्च नेताओं को उनके जबर्दस्त उत्तरदायित्व से मुक्तकर उनके लिए अगर इस प्रकार की व्यापक सेवा का क्षेत्र खुला कर दिया जाय, तो निश्चित ही वे बच्चों तथा अशिक्षितों में नव-चैतन्य का प्रसार कर लेंगे।

अगर नेपोलियन ने अपने उत्तर जीवन में लोकशिक्षण का कार्य किया होता, तो इस समय वह कितने ही वीरों का निर्माता कहा जाता। दुनिया की अपनी जिम्मेवारी को पूरी तरह से निबाहने के बाद ही दुनिया का त्यागकर जब लोग वानप्रस्थी होंगे और इस व्यापक सेवा का कार्य प्रारम्भ करेंगे, तभी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति और उन्नति होगी। ◆◆◆

आत्मज्ञानी के लिए वेद भी अनावश्यक

असंख्य जलबिन्दु हमारे सिर पर गिरते हैं, तो हमें ऐसा अनुभव हुए बिना कैसे रह सकता है कि भगवान हमें हजारों हाथों से नहला रहे हैं। आत्मज्ञान होने पर ही हम सच्चा संन्यास प्राप्त कर सकते हैं। यों तो हर अवस्था में कुछ-न-कुछ संन्यास (त्याग) करना ही पड़ता है, परन्तु आत्मज्ञान की प्राप्ति के बाद वेद की भी आवश्यकता नहीं रह जाती, "अत्र पिता अपिता भवति, माता अमाता, देवा अदेवा, वेदा अवेदाः।" ◆◆◆

यह हमारे लिए एक 'चैलेंज'

मैंने महाराष्ट्र के अकरानी महाल और अकलकुआँ के हिस्से में यात्रा की। वह सारा अदिवासियों का प्रदेश है। वहाँ के लोगों ने मुझ पर ही नहीं, बल्कि मेरे विचारों पर भी इतना प्रेम बरसाया कि सारा-का-सारा अकरानी महाल ग्रामदानी हो गया। डेढ़ सौ से ज्यादा गाँव मिले। अकलकुआँ के भी दो-तिहाई हिस्से में ग्रामदान हुए हैं। यह हमारे लिए एक 'चैलेंज'—चुनौती है। इसे स्वीकार करना होगा और उस हिस्से में जाकर ग्राम-स्वराज्य का चित्र खड़ा करने के लिए प्रयत्न करना होगा।

मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता होती है कि महाराष्ट्र के समस्त कार्यकर्ताओं ने उस अत्यन्त उपेक्षित क्षेत्र में काम करना तय किया है। उन्होंने संकल्प लिया है कि वे इस चुनौती को स्वीकार करेंगे। ◆◆◆

अनुक्रम

१. देश तभी सुधरेगा जब...
ननहेरा, २१ अप्रैल '५९ पृष्ठ ३६१
२. दिमाग अगल-अलग...
डंट्रल २३ अप्रैल '५९ ,, ३६३

◆◆◆

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।